The Participles Imperfective

Multi-tasking verbal forms

Copyright © 2009 Jishnu Shankar

Credited downloads allowed for non-commercial purposes

Credits and References

Authentic Materials presented with permission from:

Name	Source
Hindustan	Hindustan e-paper - http://epaper.hindustandainik.com/Default.aspx
Nai Dunia	Leading National Hindi Daily, published from Delhi and other major cities of India - http://epaper.naidunia.com/epapermain.aspx
References	
Snell, Rupert and Simon Weightman.	2003. Teach Yourself Hindi. Chicago: McGraw Hill.
Jain, Usha.	1995. Introduction to Hindi Grammar. Berkeley: University of California.
Schmidt, Ruth Laila.	2007. Urdu: An Essential Grammar. New York: Routledge.

कल्पवृक्ष कहानी की एक पंक्ति

- "पापा चाय" नेहा के इन शब्दों से जैसे पापा की तंद्रा भंग हुई।
- बगीचे में पौधों को पानी देते हुए वे नेहा के बारे में ही सोच रहे थे।

Participles - Nature

पानी देते हुए … सोच रहे थे is known as a participle construction.

A participle is a verb that, at the same time, has the qualities of both a verb and another part of speech such as adjective, adverb, noun , or conjunction. Typically, they act as adjectives or adverbs.

Participles - Types

Imperfective	Perfective	Conjunctive
Denotes an action in progress or an unfinished activity	Denotes a past completed action or a past action resulting in a state	Links two sequential actions performed by the same subject
Formed by adding the suffix ता, ते, ती to the verb stem	Formed by adding the suffix आ, ए, ई to the verb stem	Formed by adding कर or के to the verb stem

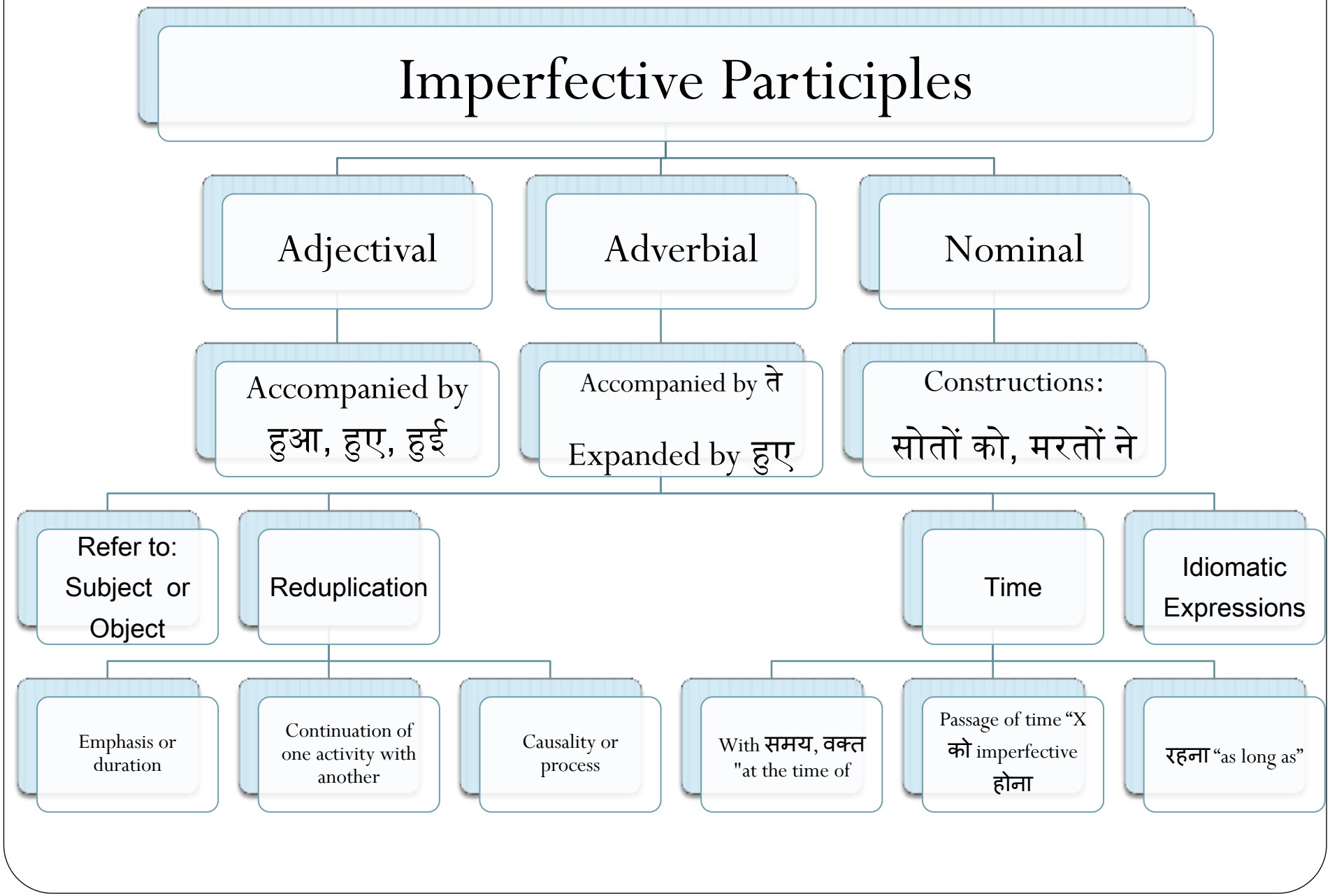
Imperfective Participles
Adjectival
Adverbial
Nominal
Accompanied by
हुआ, हुए, हुई
Accompanied by ते
Expanded by हुए
Constructions:
सोतों को, मरतों ने
Refer to:
Subject or
Object
Reduplication
Time
Idiomatic
Expressions
Emphasis or
duration
Continuation of
one activity with
another
Causality or
process
With समय, वक्त
"at the time of
Passage of time "X
को imperfective
होना
रहना "as long as"

Imperfective Participles – Adjective -- 1

These are frequently expanded by one of the simple perfective forms of होना such as हुआ, हुए etc.

उदाहरण –

चलती (हुई) औरत

पढ़ता (हुआ) लड़का

भागते (हुए) लोगों को

पानी देते हुए पापा

Imperfective Participles – Nominal or substantive use

Imperfective participles can also be used as nouns:

उदाहरण –

सोतों को मत जगाओ
मरता क्या न करता
खातों को तंग मत करो

Imperfective Participles – Adverbial -- 1

The participle, again, shows the invariable suffix ते, frequently expanded by हुए. In such cases the subject or the object performs the action of the participle while at the same time showing simultaneity of the two actions:

उदाहरण –
मैंने सिद्धार्थ को हिन्दी बोलते (हुए) सुना (referring to object)
मुस्कुराती (हुई) लड़की आई (referring to subject)
उन्होंने उसको जाते (हुए) देखा (referring to object)
पापा ने पानी देते (हुए) सोचा (referring to subject)

Imperfective Participles – Adverbial – 2
Reduplication -- 1

The participle can be repeated or reduplicated to show emphasis or duration of an action. In such cases the participle is NOT qualified by हुआ, हुए :

उदाहरण –

छात्र जिष्णु का पावरप्वाइन्ट देखते-देखते ऊबने लगे
जर्नल लिखते-लिखते सब परेशान हो गए
वह रोटी पकाते-पकाते थक गई

Imperfective Participles – Adverbial – 2
Reduplication -- 1

बचपन : कहते-कहते बनी कहानी

पिछले 33 वर्षों से मैं बच्चों के बीच में जाती हूं, अक्सर मुझे कहानी सुनानी पड़ती है। पहले मैं अपनी लिखी हुई कहानियां ले जाती थी। या कि पंचतंत्र, कथा सरित्सागर, अलिफ लैला, महाभारत आदि का सहारा लेती थी। बच्चे कहानियां सुनते थे, उन्हें अच्छी भी लगती थीं, लेकिन धीरे-धीरे मुझे लगा कि इस तरह लिखी हुई कहानियां या पहले से सुनी-सुनायी कहानियां सुनाकर मैं नया क्या कर रही हूं?

बच्चों की तो छोड़िए, अपने लिए भी ऐसा कुछ नहीं कर रही हूं, जिससे मेरा अपना ही कुछ विकास हो सके।

इसी ऊहापोह में मैंने बहुत-से स्कूलों में जाने से मना कर दिया। एकाएक मुझे अपना बचपन याद आ गया। एक बार मेरे पिता जी कहानी सुना रहे थे। मैं चुपचाप सुन रही थी, तब उन्होंने कहा था कि यदि कहानी सुनते वक्त यों चुपचाप बैठी रहोगी तो न तो कहानी सुनाने वाले को अच्छा लगेगा, न तुम्हें ही। कहानी तभी आगे बढ़ती है जब सुनने वाला पूछता है। फिर...फिर क्या हुआ?

कमेंट्री

इस मामूली सी बात ने जैसे मुझे आगे का रास्ता दिखाया। मैंने सोचा कि कहानी में पूछने वाले की भूमिका होनी चाहिए। बस नए सिरे से कहानी बननी शुरू हो गई। अब मैं जब भी बच्चों के बीच में जाती, मुझे न तो किसी कहानी को पढ़ने की जरूरत पड़ती न सुनाने की। बच्चों के बीच जाकर मैं वहां किसी भी चीज पर नजर गड़ाती। कोई मेज, पंखा, दीवार, पेड़, बस्ता, पेंसिल, छड़ी, कोई फूल, कोई पक्षी या कुछ भी।

मैं शुरू करती एक बस्ता था। उसमें तरह-तरह की किताबें थीं। फिर बच्चों से पूछती बस्ते में और क्या था? बच्चे हाथ उठा देते। इस तरह कहानी की यात्रा शुरू हो जाती। बस्ता कभी दौड़ते हुए सड़क पर पहुंचता, कभी पेड़ों पर लटकता, कभी टीचर से डांट खाता। जिस बच्चे का बस्ता जैसा दीखता-कहानी उसी रफ्तार से आगे बढ़ने लगती। सारे के सारे बच्चे उस कहानी के पीछे दौड़ने लगते। उनकी आंखों की चमक, उतावलापन, बार-बार हाथ उठाना, हंसना-खिलखिलाना सब उसी कहानी के विकास की ही नहीं बच्चों की दिलचस्पी की भी कथा कहते। कहानियों का आदि, मध्य, अंत बार-बार बदलते। जब मैं शुरू करती एक घर था। उसमें एक खिड़की थी। जैसे ही मैं खिड़की कहती, उसमें से वे ही बच्चे झांकने लगते, जो मेरे सामने बैठे होते।

इस तरह कहानी जिस तरह से आगे बढ़ती मुझे बच्चों के मन की, उनकी चिंताओं की, उनकी खुशियों, निराशाओं व पसंद-नापसंद की जानकारी मिलती। कभी-कभी मुझे लगता कि मैं आज के इन होशियार, टैक्नोसैवी बच्चों को कितना कम जानती हूं। बच्चों के साथ कहानी की दुनिया में रमकर मैंने भी बहुत कुछ सीखा। एक घटना को इस तरह से देखने पर पता चला। हर बार एक ऐसी नई कहानी बनी, जो न किसी दूसरी कहानी से मिलती-जुलती थी, न किसी की नकल थी।

हाल ही में मैं गुड़गांव के स्कूल में गई थी। उन्हीं दिनों दिल्ली में बम ब्लास्ट हुए थे। जिन बच्चों के बीच मैं गई थी, वे दूसरी और तीसरी कक्षा के बच्चे थे। मुझे यह देखकर हैरानी हुई कि उस दिन उन नन्हे बच्चों ने जो भी कहानियां बुनीं, उन सभी का अंत बम ब्लास्ट में हुआ था। वे हंसते थे फिर भी उनकी आंखों में बम का डर कौंधता था। हिंसा का सामना कैसे करें, यह बात उनकी समझ से परे थी। हिंसा जितनी होती है, मीडिया के जरिए उससे हजार गुना सुरसा के मुंह की तरह फैलती-बढ़ती जाती है। हिंसा को बेचने वाले यह कभी क्यों नहीं समझते कि उनकी टीआर पी बढ़ रही है मगर वे देखने वालों, पढ़ने वालों में कितनी असुरक्षा भर रहे हैं।

हम चाहे जितनी अच्छी कहानी अपने बच्चों को सुनाएं, उन्हें लिखना सिखाएं मगर एक ऐसी दुनिया, जहां नफरत का बोलबाला है, जहां हर एक एक-दूसरे को नोंचने-खसोटने को आतुर हो, ऐसे में बच्चे अपनी उम्र से कई गुना बड़े कैसे नहीं होंगे?

हम बच्चों को कैसी दुनिया दे रहे हैं, यह हमें सोचना है। नफरत, हिंसा, मारामारी या कि एक-दूसरे से मिलकर हाथ में हाथ डालकर चलना। जब ऐसा हो तभी कोई कहानी बेहद खूबसरत, पॉजिटिव और एक ऐसी नई इबारत हो सकती है, जिसे सचमुच बच्चों के मन पर लिखा जा सकता है।

अमेरिका में इतिहास बनाने वाले नव निर्वाचित राष्ट्रपति बराक ओबामा ने चुनाव जीतने के बाद अपने भाषण में बार-बार कहा-यस वी कैन। मैं भी कहूंगी हां हम कर सकते हैं। हम अपने बच्चों के मन पर नई कहानी की इबारत भी लिख सकते हैं। एक अच्छी कहानी जो किसी भी तरह के अन्याय, हिंसा, गैरबराबरी और शोषण के विरुद्ध होगी। एक ऐसी दुनिया जिसमें आंसू नहीं खिलखिलाहटों की बरसात होगी।

क्षमा शर्मा
लेखिका नंदन की कार्यकारी संपादक हैं

Imperfective Participles – Adverbial – 2
Reduplication -- 2

Other uses of reduplication of adverbial imperfective participles:

To signify one activity continues while another transpires:

जर्नल लिखते-लिखते उसकी हिन्दी अच्छी होने लगी
सोचते-सोचते वह विद्वान बन गया
चलते-चलते शाम होने लगी

Imperfective Participles – Adverbial – 2
Reduplication -- 2

मरते-मरते भी नहीं सुनी पुलिस ने

हिन्दुस्तान टीम लोनी/दिल्ली

इलाके को लेकर पुलिस ने मंगलवार को नया अध्याय लिख डाला। दिल्ली पुलिस ने सामूहिक बलात्कार की शिकार एक नाबालिग लड़की का मरने से पहले दिया गया बयान यह कहकर दर्ज नहीं किया कि मामला उनके क्षेत्र का नहीं है। वहीं तमाम हो हल्ले के बाद यूपी पुलिस ने रेप की बजाए छेड़छाड़ में दो को गिरफ्तार कर इतिश्री कर ली।

बलात्कार की शिकार किशोरी ने की आत्महत्या

यूपी पुलिस ने छेड़छाड़ का मामला दर्ज किया

गांव महमूदपुर में एक किशोरी के साथ पड़ोस में रहने वाले दो युवकों ने सामूहिक दुष्कर्म किया। इसके बाद किशोरी ने अपने ऊपर मिट्टी का तेल डालकर आग लगा ली। बुरी तरह से झुलस गई किशोरी को दिल्ली के जीटीबी अस्पताल में भर्ती कराया गया। मौके पर मौजूद लोगों ने बताया कि किशोरी ने मरने से पूर्व दिल्ली पुलिस को दो युवकों द्वारा उसके साथ दुष्कर्म करने की बात बताई। उत्तर पूर्वी जिले के एडिशनल डीसीपी राजीव रंजन का कहना है कि चूंकि मामला लोनी पुलिस के क्षेत्र के तहत आता है। दिल्ली पुलिस पीड़ित से मिली जानकारी को सिर्फ संबंधित थाने की जानकारी में लाती है। इस मामले में भी यही किया गया, लेकिन वरिष्ठ अधिवक्ता रमेश गुप्ता के मुताबिक, मौके पर मौजूद पुलिस मृत्यु पूर्व दिए गए बयान लिख सकती है और यहां इलाके जैसी कोई बात नहीं चलती। गाजियाबाद के एसएसपी दीपक रतन ने कहा कि यह बलात्कार का मामला नहीं है। एफआईआर में इसका कोई जिक्र नहीं किया गया है।

मुझे भी कुछ कहना है इस मुद्दे पर अपने विचार भेजें MBKKH स्पेस के बाद अपना मैसेज 54242 पर भेजे

क्या पुलिस अपनी जिम्मेदारियों से बचने के लिए कानूनी जाल तैयार करती है?

जीतते-जीतते रह गया पाकिस्तान

जू. एशिया कप हॉकी

कोरिया ने अंतिम मिनट में गोल कर मैच 3-3 से ड्रॉ कराया

संजीव गर्ग, हैदराबाद

70 मिनट के खेल में पाकिस्तान मुश्किल से पंद्रह मिनट ही अच्छा खेली होगी। इन्हीं 15 मिनट में मैच की तस्वीर काफी कुछ बदल गई थी। ऐसा लगने लगा कि 50 मिनट तक 2-0 से पिछड़ी पाकिस्तान की टीम कोरिया से यह मैच 3-2 से जीत जाएगी लेकिन जीत उनकी किस्मत में नहीं थी। वैसे जूनियर एशिया कप के ग्रुप-ए के इस मुकाबले में जीत की हकदार कोरिया ही थी। स्पीड, एकुरेसी और आपसी तालमेल जितना कोरियाई टीम में नजर आया, पाक टीम उसमें काफी पिछड़ी हुई थी।

70वें मिनट में डिफेंडर की एक गलती से पाकिस्तान को जीते हुए मैच में ड्रॉ के लिए मजबूर होना पड़ा। मैच 3-3 से ड्रॉ रहा। 70वें मिनट में मिले पांचवें पेनल्टी कॉर्नर पर कोरिया के नाम ह्यून वू ने गोल कर मैच को ड्रॉ करा दिया। ह्यून का यह दूसरा गोल था। इससे पहले वू ने दूसरे पेनल्टी कॉर्नर पर टीम को शुरुआती बढ़त दिलाई थी। कोरिया की ओर से दूसरा गोल लिम वू ग्यूं ने पेनल्टी कॉर्नर पर किया। कोरियाई स्ट्राइकर वू अकेले ही पूरी पाकिस्तानी टीम पर भारी पड़े। उन्होंने न केवल दो गोल किए बल्कि पाकिस्तानी रक्षा दीवार को कई बार भेदने की कोशिश की। उनकी लगातार यही कोशिश कोरिया को मैच में पांच पेनल्टी कॉर्नर दिलाने में सफल रही और उसने इसमें से तीन पर गोल किए। पाकिस्तान को मैच में सिर्फ दो पेनल्टी कॉर्नर मिले और दोनों पर ही ड्रैग फ्लिकर कासिफ अली ने गोल किए। इनायत हुसैन ने 50वें मिनट पाकिस्तान का खाता खोला। दाएं छोर से आदिल हुसैन से मिले पास पर इनायत ने यह गोल किया।

एक गोल होने के बाद तो पाकिस्तानी कोरिया पर पूरी तरह से हावी हो गए। अगले पंद्रह मिनट तक एक के एक बाद एक हमले उसने किए। 2-0 की बढ़त ले चुकी कोरियाई टीम भी कुछ हल्की पड़ गई थी। बस इसी का फायदा पाकिस्तान ने उठाया। कोरिया और पाकिस्तान एक-एक जीत और एक-एक ड्रॉ के साथ 4-4 अंक पर हैं।

पाकिस्तानी कोच कामरान अशरफ ने कहा, मैच में हम जैसा खेले उससे हम एक अंक से भी संतुष्ट हैं। जहां तक है हमारा अगला मुकाबला भारत से होगा और मैं भारत को बेहतर टीम मानता हूं। भारत को भी पता है कि सेमीफाइनल में उसे इन दोनों में से ही किसी एक टीम से खेलना है। यही कारण था कि कोच सहित पूरी भारतीय टीम इस मैच को देखने के लिए यहां मौजूद थी और हर एक खिलाड़ी के खेल पर पैनी नजर रख रही थी। तीन बार की चैंपियन पाकिस्तान हो या एक बार की चैंपियन कोरिया हो भारत को अपना खिताब बचाने के लिए इन दोनों ही टीमों से पार पाना होगा।

सोमवार के मैच : ग्रुप-ए : जापान-मलयेशिया (दोप. 2.30 बजे), भारत-सिंगापुर (शाम 5.00 बजे)। ग्रुप-बी : पाकिस्तान-बांग्लादेश (दोप. 3.30 बजे), कोरिया-ओमान (शाम 4.30 बजे)।

बांग्लादेश की धमाकेदार जीत

ओमान लगातार दूसरा मैच हार गया। पाकिस्तान से जहां वह 5-1 से हारा था तो बांग्लादेश ने उसे आज 7-1 से पराजित किया। इस तरह ओमान की जूनियर विश्व कप के लिए क्वालिफाई करने की उम्मीदें खत्म हो गई हैं। बस देखना यह है कि वह 8 टीमों के इस टूर्नामेंट में कौन से नम्बर पर आता है। बांग्लादेश अपना पहला मैच कोरिया से 8-0 से हरा गया था। बांग्लादेश को अपना अंतिम मैच पाकिस्तान से खेलना है।

बांग्लादेश के लिए कप्तान रसेल महमूद और मो. हसन जुबैर ने दो-दो गोल किए। एशादुज्जमान चंदन, रिमोन कुमार घोष और कृष्णो कुमिर ने एक-एक गोल किया।

Imperfective Participles – Adverbial – 2
Reduplication -- 3

Other uses of reduplication of adverbial imperfective participles:

To indicate an activity as the cause of the primary verb of the sentence. It can also indicate a gradual process leading to some result:

शराब पीते-पीते उसका जिगर खराब होने लगा
फ़ास्ट फ़ूड खाते-खाते उनका पेट बड़ा हो गया
आराम करते-करते खरगोश बहुत पीछे छूट गया

Imperfective Participles – Adverbial – 2
Time-- 1

Other uses of reduplication of adverbial imperfective participles:

In time expressions, when used with समय or वक्त, they are used to indicate “at the time of”:

चलते समय / वक्त उसने देख लिया कि चाबी उसकी जेब में थी
पढ़ते समय / वक्त वह नोट्स लेता था
खाते समय / वक्त वह कभी नहीं बोलता

Imperfective Participles – Adverbial – 2
Time-- 2

They can denote passage of time since the beginning of the activity when used in "X को imperfective होना" form:

आपको हिन्दी पढ़ते हुए एक साल हुआ है
उसको शिकागो गए हुए दो महीने हुए हैं
हमको दौड़ते हुए एक घंटा हुआ है

Imperfective Participles – Adverbial – 2
Time-- 3

When talking of time with रहना it denotes "as long as":

वह होश रहते उससे बात नहीं करेगा
जान रहते वे वहाँ नहीं जाएँगे
वह ख़ून की एक भी बूँद रहते युद्ध नहीं छोड़ेगा

Imerfective Participles – Idiomatic Constructions

Can be used for idiomatic expressions:

मेरे जीते जी – “as long as I am alive”

होते होते – “gradually, little by little”

Imperfective Participles – अभ्यास – 1

Translate into English:

1. चलती कार
2. हँसता बच्चा
3. नाचती लड़कियों के बारे में
4. गाते गाते काम करना
5. दौड़ते दौड़ते घर लौट जाना
6. लौटते समय
7. पौधे लगाते वक़्त
8. खेलते कूदतों के साथ समय बिताना
9. तुम्हारे जीते जी
10. दादाजी की जान रहते

Imperfective Participles – अभ्यास – 2

Translate into Hindi:

1. Sleeping dogs
2. Men washing clothes
3. Women singing songs
4. To the laughing girl
5. Towards the man climbing that tree
6. Near the woman [who is] studying
7. To fall asleep while talking
8. To sing songs while bathing
9. At the to go to the church
10. At the time of arrival

Imperfective Participles – अभ्यास – 3

Transform the following sentences into single imperfective participle sentences:

1. बच्चा दौड़ रहा था। बच्चा गिर गया।
2. चिड़िया उड़ रही थी। मैंने चिड़िया को देखा।
3. लड़की किताब पढ़ रही थी। लड़की हँस रही थी।
4. छात्र रेडियो सुन रहा था। छात्र ने अपना काम किया।
5. मैंने आपको सुना। आप गाना गा रहे थे।
6. मेरे दोस्त ने तुम्हें देखा। तुम नाच रहे थे।
7. तुमने आसमान में बिजली देखी। बिजली चमक रही थी।
8. चोर भाग रहा था। चोर वहाँ पहुँचा। (use reduplication)
9. बच्चे खेल रहे थे। बच्चे थक गए। (use reduplication)
10. मैं सारा दिन काम कर रहा था। मैं थक गया। (use reduplication)